Certificate of Publication

ISSN 2230-7850
Impact Factor : 3.1560 (UIF)
RNI: MAHMUL 2011/38595

Indian Streams Research Journal

International Recognized Multidisciplinary Research Journal

This is to certify that our review board accepted research paper of Dr. /Shri. /Smt.: सुधीर सुदाम कावरे, सुनील कुमार सेन, राजकुमार Topic:- उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत ग्रामिण एवं शहरी परिवेश के विद्यार्थियों में व्यक्तिगत मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन College:- गुरू घासीदास विश्वविद्यालय, बिलासपूर, छत्तिसगढ. The research paper is original & innovative. It is done double blind peer reviewed. Your article is published in the month of January, Year 2016.

Authorized Signature

Laxmi Book Publication
259/34, Ravivar Path, Solapur-413005 Maharashtra India
Contact Detail: +91-0217-2372010 / 9595-359-435
e-Mail: ayisrj2011@gmail.com
Website: www.isrj.org

ISSN 2230-7850

INDIAN STREAMS RESEARCH JOURNAL

International Recognition Multidisciplinary Research Journal

Volume : V, Issue : VII, August - 2015 • Impact Factor 3.1560 (UIF)
DOI Prefix 10.9780/22307850

उच्च प्राथमिक विद्यालय के शिक्षकों पर मध्याहन भोजन योजना का शिक्षण अधिगम प्रक्रिया के संदर्भ में अध्ययन

Editor-In-Chief H. N. JAGTAP

Research by
सुधीर सुदाम कावरे
सहायक प्राध्यापक, शिक्षा विभाग, गुरु घासीदास विश्वविद्यालय बिलासपुर

ABSTRACT:- शिक्षा मानव जीवन का आधार है मानव विकास और उन्नयन शिक्षा पर ही निर्भर है। शिक्षा व्यक्तित्व का भी निर्माण करती है और सुधार भी करती है। जन्म के समय बालक पशुवत आचरण करता है। उस समय वह अपनी मूल प्रवृत्तियों से प्रेरित होकर कार्य करता है। शिक्षा उनकी इन प्रवृत्तियों का उचित मार्गदर्शन करके उसे परिपक्वता प्रदान करती है।

Indian Streams Research Journal
ISSN NO:- 2230-7850
Vol. - 5, Issue - 7, Aug - 2015

Contents

16
प्रो. कबड्डी एक शोध व बोध
बालकृष्ण डा. भोसले

19
भारतातील सार्वजनिक वितरण व्यवस्था : सद्यस्थिती व उपाय
ज्ञानेश्वर खोजे and खंडू नवखंडे

1
उच्च प्राथमिक विद्यालय के शिक्षकों पर मध्याहन भोजन योजना का शिक्षण अधिगम प्रक्रिया के संदर्भ में अध्ययन
सुधीर सुदाम कावरे, सुशील कुमार सेन, नागेन्द्र कुमार यादव

5
9वाँ विश्व हिंदी सम्मेलन – एक सपना हुआ सच
वर्षा डिसूजा

7
जल नियोजन व जलव्यवस्थापनासाठी वर्षा संचयन एक प्रभावी उपाय
वासंती निवकवडे

12
" औरंगाबाद विभागातील अध्यापक विद्यालयामधील कार्यानुभव विषयातील प्रात्यक्षिक कार्यांचा सद्यःस्थितीचा एक चिकित्सक अभ्यास "
झेंडे सुखदेव सिताराम

IN THIS ISSUE

राजबीर सिंह	22
रमाकांत तिडके	26
संजीव कुमार गुप्ता	30
शिरिष कडू	34

Indian Streams Research Journal
ISSN 2230-7850

Impact Factor : 3.1560(UIF)
Volume - 5 | Issue - 7 | Aug - 2015

उच्च प्राथमिक विद्यालय के शिक्षकों पर मध्याहन भोजन योजना का शिक्षण अधिगम प्रक्रिया के संदर्भ में अध्ययन

सुधीर सुदाम कावरे
सहायक प्राध्यापक, शिक्षा विभाग, गुरु घासीदास विश्वविद्यालय बिलासपुर, छत्तीसगढ़ एवं

सुनील कुमार सेन[1], नागेन्द्र कुमार यादव[2]
[1]सहायक प्राध्यापक, शिक्षा विभाग, गुरु घासीदास विश्वविद्यालय बिलासपुर, छत्तीसगढ़
[2]शोधकर्ता, शिक्षा विभाग, गुरु घासीदास विश्वविद्यालय बिलासपुर, छत्तीसगढ़.

सारांश :
शिक्षा मानव जीवन का आधार है मानव विकास और उन्नयन शिक्षा पर ही निर्भर है। शिक्षा व्यक्तित्व का भी निर्माण करती है और श्रृंगार भी करती है। जन्म के समय बालक पशुवत आचरण करता है। उस समय वह अपनी मूल प्रवृत्तियों से प्रेरित होकर कार्य करता है। शिक्षा उनकी इन प्रवृत्तियों का उचित मार्गदर्शन करके उसे परिपक्वता प्रदान करती है। उसके व्यवहार को उसके आचरण को, उसके क्रियाकलाप को उचित और समाजोपयोगी बनाती है। शिक्षा उसमें रचनात्मक शक्ति का विकास करती है। शिक्षा द्वारा वह केवल अपने वातावरण से अनुकूल करने में ही समर्थ नहीं होता वरन् वातावरण और प्रकृति पर विजय प्राप्त करने का भी प्रयत्न करता है। प्रस्तुत शोध में शोधकर्ता द्वारा मध्याहन भोजन योजना का अध्ययन तथा इस योजना का शिक्षण अधिगम प्रक्रिया के संदर्भ में अध्ययन किया है। इस शोधद्वारा भारत सरकार एवं विभिन्न राज्य सरकारों द्वारा मध्याहन भोजन योजना के विषय में कितना धन खर्च किया जा रहा है। शिक्षक मध्याहन योजना भोजन योजना के प्रति कम सहभागी प्राप्त हुए एवं अन्य शैक्षणिक कार्यों में अधिक व्यस्त थे। शिक्षकों ने माना कि मध्याहन भोजन योजना के कार्यों से शिक्षण अधिगम प्रक्रिया प्रभावित हुई है। यह तथ्य शोध उपरान्त सामने है।

शब्द कुंजी: मध्याहन भोजन योजना, शिक्षण अधिगम प्रक्रिया.

प्रस्तावना :–
शिक्षा मानव विकास का सक्षम साधन

शिक्षा सामाजिक चेतना को जागृत करती है सामाजिक धरोहर की रक्षा करती है। आगामी पीढ़ी को उसका हस्तांतरण करती है और विकास करती है। शिक्षा ही वैक्तिकता की केंचुली से बाहर लाकर मानव को इस योग्य बनाती है कि वह समाज राष्ट्र और सम्पूर्ण समाज संसार के प्रति स्वस्थ्य दृष्टीकोण अपना सके और अपने कर्तव्यों का निर्वहन भली प्रकार से कर सके। बालक को जीवनपर्यन्त अपने माता पिता भाई बहन मित्र शिक्षक पड़ोसी और समाज के अन्य लोगों से प्राप्त होती है। वह शिक्षा विद्यालय की चार दिवारी तक सीमित न रहकर परिवार विद्यालय दुकान, दफ्तर, खेल के मैदान, पार्क सिनेमा हाल आदि सब जगह प्राप्त होती रहती है। इसमें सम्पूर्ण जीवन ही शिक्षा काल होता है।

व्यक्ति हर समय कुछ ना कुछ सीखता रहता है। इसमें कोई पूर्व निर्धारित कार्यक्रम नहीं होता है। निश्चित शिक्षण विधियाँ नहीं होती और पुस्तकों का कोई स्थान नहीं होता है। इस अर्थ में सभी विद्यार्थी होते है और सभी शिक्षक बालक जिन-जिन के सम्पर्क में आता है। वे सभी शिक्षक होते है। इस प्रकार की शिक्षा अत्यंत व्यापक होती है। बालक जीवन भर जो सीखता है और अनुभव करता है वह सब शिक्षा के अन्तर्गत माना जाता है। इस प्रकार की शिक्षा बालक को व्यवहारिक ज्ञान प्रदान करते है। उसमें अपने वातावरण के साथ समायोजन करने की क्षमता पैदा करता है।

जे.एस. मैकेन्जी के अनुसार ''व्यापक कार्य में शिक्षा एक ऐसी प्रक्रिया है जो जीवन पर्यन्त चलती रहती है और जीवन के प्रत्येक अनुभव से उसमें वृद्धि होती है।''

की आवश्यकता है। शिक्षक मध्याह्न भोजन योजना के कार्यों में व्यय सहभागी प्राप्त हुए तथा शिक्षण अधिगम प्रक्रिया मध्याह्न भोजन योजना से प्रभावित होती है।

संदर्भ ग्रंथ

१.पाण्डेय,संगीता व पाण्डेय, तेजस्वर (२०१२) भारत में समाजिक समस्याए, टीएनएच कोरलोस्कर।

२.शर्मा,प्रदीप कुमार (२०१३) अनिवार्य एवं निशुल्क शिक्षा का अधिकार कानून : प्रमुख चुनौतियाँ एवं संभावनाए,एडु जक्शन।

३.मिश्र, स्वतंत्र (२०१३) इन पब्लिक स्कूलों का काम बच्चों में कुण्ठा पैदा करना, शुक्रवार वर्ष ५, अंक : ४० ७ फरवरी २०१३ पृ.क. १४-१५।

४.लाली, रईस अहमद (२०१३) ये पब्लिक स्कूल है या पैसा पैदा करने के कारखाने, शुक्रवार वर्ष ५, अंक : ४० ७ फरवरी २०१३ पृ.क. १७-१८।

५.चौहान, मीना (२०१२) विभिन्न वर्गों के शिक्षकों में व्यवसायिक प्रतिबद्धता का अध्ययन शोध समीक्षा मूल्यांकन नम्बवर २०१२ भाग -४ ईसु ४६, जयपुर।

६.कटारा राकेश एवं मित्तल ध्रुव कुमार अक्टूबर (२०१२) निर्मितवादी अधिगम पद्धतियाँ इडू सर्च जनरल ऑफ एजुकेशनल रिसर्च भाग - ३ अक्टूबर २०१२।

७.शर्मा भावना एवं महाशब्दे संगीता अक्टूबर (२०११) शिक्षा के मौलिक अधिकार के प्रति शासकीय एवं अशासकीय विद्यालय के शिक्षक शिक्षिकाओं की जागरुकता का अध्ययन इडू सर्च जनरल ऑफ एजुकेशनल रिसर्च भाग - ३ अक्टूबर २०११।

८.पचौरी गिरीश (२००९) उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षा, लायल बुक डिपो मेरठ।

९.बेस्ट जे डब्ल्यू एवं कान जे. वी. (२००३) रिसर्च इन एजुकेशन (नौवा एडिसन) नई दिल्ली, प्रेन्टिस ऑफ इण्डिया।

१०.कमल पी एवं चौधरी डी.एल. (२०१०) सर्वशिक्षा अभियान के संदर्भ में प्राथमिक विद्यालयों की स्थिति का समीक्षात्मक अध्ययन, भारतीय आधुनिक शिक्षा।

११.करलिंगर (१९६६) फाउन्डेसन ऑफ बिहेवियरल रिसर्च।

१२.कौल एल २०११ शैक्षिक अनुसंधान की कार्यप्रणाली विकास पब्लिकेशन हाउस प्रा. लि. हिन्दी संस्करण १९९८ नई पुनः मुद्रण २०११.

१३.कुमार डी एवं शर्मा एस. २०११ ए स्टडी ऑफ परसेन्ट एण्ड टीचर्स अवेरनेस टू वर्ड राईट टू एजुकेशन एक्ट २००९.

१४.सिंह ए.के. २०१० मनोविज्ञान समाजशास्त्र तथा शिक्षा में शोधविधियाँ नौवा संस्करण दिल्ली, मोती लाल बनारसी दास।

१५.भार्गव एल. २००७ शिक्षा के समाजिक परिपेक्ष्य वंदना पब्लिकेशन।

१६.पाठक एस.पी. २०११ एन एनवेस्टिगेटीव ओवर व्यू ऑफ द राईट टू एजुकेशन २००९।

१७.पाठक पी.डी. शिक्षा मनोविज्ञान अग्रवाल पब्लिकेशन आगरा २।

१८.प्रकाश ओ २००१ प्राचीन भारत का समाजिक एवं आर्थिक इतिहास पंचम संशोधित एवं संवर्धित संस्करण विश्व प्रकाशन।

१९.सक्सेना एन.आर.एस. २०११ शिक्षा के दार्शनिक एवं समाज शास्त्रीय सिद्धान्त।

२०.त्यागी जी.डी. २०१२ भारत में शिक्षा का विकास अग्रवाल पब्लिकेशन।

२१.लाल आर.बी. २०११ शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय सिद्धान्त रस्तोगी पब्लिकेशन।